जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोन:- 2627612, 2427249 फैक्स:- 0145-2624665 | वर्ष: 29 | संख्या: 45 | प्रभात | अजमेर, शुक्रवार 13 सितम्बर, 2024 | आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 | पृष्ठ 6 | मूल्य 2.50 रु.

अशोक गहलोत ने सभी घोड़े खोल दिये हैं ए.आई.सी.सी. में

वे किसी भी तरह, ए.आई.सी.सी. में अंगूठा टेकने के लिये कोई सा भी पद लेने को तैयार हैं

-रेणु मित्तल-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 सितम्बर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, जो लोकसभा चुनावों में अपने बेटे की पराजय के बाद, कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे, ने अन्ततः बाहर निकलने की हिम्मत जुटाने का निर्णय ले लिया है। वे कल दिल्ली आ रहे हैं तथा रात को दिल्ली में रुकेंगे।

समझा जाता है कि कुछ समय से अशोक गहलोत ए.आई.सी.सी. में अपने सम्बन्धों को पुनर्जीवित कर रहे थे। इस सब के पीछे उनका उद्देश्य अपने राजनैतिक कैरियर को पुनः पटरी पर लाना तथा पार्टी में कोई पद हासिल करना ही था।

समझा जाता है कि चूँकि हरियाणा के चुनाव नजदीक ही हैं तथा वरिष्ठ कांग्रेस नेता भूपिन्दर सिंह हूड्डा की वहाँ चल रही है, इसलिए गहलोत ने उनसे कहा कि वे उनकी कुछ मदद करें। इस तरह, गहलोत पैर रखने की जगह की तलाश में हैं।

- हरियाणा के विधानसभा चुनाव में भूपेन्द्र हुड्डा सर्वेसर्वा हैं और गहलोत ने हुड्डा से मदद मांगी है, कैसा भी छोटा-मोटा पद दिलवाने में।
- हुड्डा की मदद से संभावना है, गहलोत हरियाणा के चुनाव में पर्यवेक्षक नियुक्त हो जायें। यह नियुक्ति मुश्किल से एक माह के लिये ही प्रभावी है और कुछ खास काम नहीं है इस पद पर, विशेषकर इसलिए कि हुड्डा ही हरियाणा का चुनाव फायनैंस कर रहे हैं, अतः पर्यवेक्षक की भूमिका और भी कमज़ोर हो जाती है।
- सामान्यतौर पर, जब किसी भी मु.मंत्री को पर्यवेक्षक बनाया जाता है तो यह भी मकसद होता है कि वह मु.मंत्री चुनाव को फायनैंस भी करेगा।
- जब से गहलोत ने सोनिया गांधी के खिलाफ बगावत की थी, राहुल व प्रियंका उन पर विश्वास करने को तैयार नहीं हैं।
- गहलोत हर कीमत पर सचिन पायलट को मु.मंत्री नहीं बनने देना चाहते थे और यह ही उनकी बगावत का मुख्य कारण था।

समझा जाता है कि गहलोत को हरियाणा चुनावों के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किया जा सकता है।

अगर ऐसा हो जाता है, जो इस जिम्मेदारी के निर्वहन का काम एक महीने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ममता बनर्जी ने इस्तीफा देने की पेशकश की

-अंजन रॉय-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 सितम्बर। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने जूनियर डॉक्टरों और राज्य सरकार के बीच चल रहे टकराव के संदन में अपने पद से इस्तीफा देने की पेशकश की है।

- ममता बनर्जी ने जूनियर डॉक्टर्स व राज्य सरकार के टकराव के संदर्भ में इस्तीफा देने का प्रस्ताव रखा। मुख्यमंत्री ने कहा, वे दो घंटे तक डॉक्टर्स के प्रतिनिधियों का इंतज़ार करती रहीं, पर कोई नहीं आया।
- असल में डॉक्टर्स की मांग है कि चूंकि ममता बनर्जी हर बात को गलत तरीके से पेश करती हैं, इसलिए जब वार्ता का सीधा प्रसारण होगा, तब ही वे ममता बनर्जी से मिलेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जूनियर डॉक्टरों के प्रतिनिधियों से मिलने के लिए उन्होंने दो घंटे इंतजार किया।

तृणमूल कांग्रेस के अंदर उनके इस्तीफे तथा उनकी जगह नया चेहरा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सीता की विनम्रता व दोस्ताना याद रहेगा- सतीश मिश्रा

सीताराम येचुरी की दिल्ली के मेदान्ता अस्पताल में ''लंग इन्फैक्शन'' से मृत्यु हो गई, वे 15 अगस्त से वैन्टीलेटर पर थे

-डॉ. सतीश मिश्रा-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 सितम्बर। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया मार्क्सवादी (सी.पी.आई.एम.) के महासचिव सीताराम येचुरी का लम्बी बीमारी के बाद गुरुवार को निधन हो गया। उनके निधन से देश ने एक सच्चे जन नेता को खो दिया, जो हमेशा गरीबों और पिछड़ों के लिए आगे आकर लड़ा।

अपने मित्रों में सीता नाम से लोकप्रिय येचुरी हमेशा से प्रगतिवादी लक्ष्यों के लिये प्रतिबद्ध रहे, अपने पथ से कभी भी नहीं डिगे। उन्होंने गैर भाजपाई दलों में आम सहमति बनाने के लिए बड़ी मेहनत की।

उनकी मृत्यु संविधान और उदार लोकतंत्र के समर्थकों के लिए भी भारी झटका है, पर मेरे लिए यह व्यक्तिगत नुकसान भी है, वे मेरे मित्र थे।

माकपा व अस्पताल सूत्रों ने उनकी मृत्यु की पुष्टि की है। बहत्तर वर्षीय सीताराम गत 19 अगस्त को गंभीर अवस्था में अस्पताल में भर्ती हुए थे, तब से ही वे वैंटीलेटर पर थे।

वे नई दिल्ली एम्स के आई.सी.यू. में भर्ती थे और उनका श्वसन नली के गंभीर संक्रमण का इलाज चल रहा था।

- एक मेधावी छात्र के रूप में उन्होंने 1969 में देश भर में अव्वल नम्बर से सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकेण्डरी एजुकेशन की हायर सैकण्डरी परीक्षा पास की थी।
- 1974 में वे सी.पी.एम. के छात्र संगठन से जुड़े तथा 1975 में एमरजैन्सी में गिरफ्तार हुए तथा एमरजैन्सी के बाद जे.एन.यू. की स्टूडैन्ट यूनियन के अध्यक्ष बने और उसके बाद पार्टी में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे और अंत में तीन बार पार्टी के महासचिव रहे।
- वे कामरेड सुरजीत की, विपक्ष में समन्वय बैठाने की नीति के अनुयायी थे।
- वे राहुल के निकटस्थ सलाहकार थे, विपक्ष के गठबंधन इण्डिया अलॉयन्स के प्रमुख नेता थे, तथा उनकी मृत्यु से इण्डिया गठबंधन को भारी झटका लगा है।

जाने-माने विपक्षी नेता येचुरी संसद के भीतर व बाहर कट्टर भाजपा विरोधी रुख के लिए जाने जाते थे। माकपा में उनके दबदबे का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे 1984 से ही माकपा की केन्द्रीय समिति के सदस्य थे और येचुरी 1992 से पोलित ब्यूरो के सदस्य बने।

राज्यसभा में येचुरी का कार्यकाल 2020 में खत्म हुआ था। तब माकपा के केरल गुट के प्रमुख प्रकाश करात व पिनाराई विजयन थे, उन्होंने येचुरी को दोबारा मनोनीत करने से मना कर दिया था।

केरल लॉबी के इस इनकार से उदारवादी लोकतांत्रिक ताकतों को भारी झटका लगा था क्योंकि वे सभी को साथ लेकर चलने वाले नेता थे। येचुरी बहुत मुखर वक्ता थे तथा जटिल मुद्दों पर भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मांडया में सांप्रदायिक तनाव, पर हालात नियंत्रण में

-लक्ष्मण वेंकट कुची-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 सितम्बर। बैंगलुरू में कुछ 100 कि.मी. दूर मांडया नगर में, बुधवार की साम्प्रदायिक संघर्ष के बाद से तनाव बना हुआ है। लेकिन, बुधवार तथा गुरुवार को पुलिस द्वारा की गई सख्त तथा तुरंत कार्यवाही के बाद, जिनमें, 52 लोगों को हिरासत में लिया गया, स्थिति अब नियंत्रण में है।

पुलिस ने इस क्षेत्र में हाई अलर्ट घोषित किया है, और मुख्यमंत्री एस.सिद्धारमैया ने कहा कि मांडया

- कर्नाटक के मांडया शहर में बुधवार रात गणेश विसर्जन जुलूस पर पथराव की घटना से शहर में भारी सांप्रदायिक तनाव हो गया था। पुलिस ने त्वरित कार्यवाही कर 52 लोगों को गिरफ्तार किया।

जिले के नागमंगला में गणपति विसर्जन जुलूस के दौरान भड़की हिंसा असामाजिक तत्वों का काम है, जिसमें समाज की शांति को खतरा है तथा सरकार ने इसका गंभीर संज्ञान लिया है। उन्होंने कहा कि धर्म के नाम पर जो लोग विभाजन का प्रयास कर रहे हैं उनके खिलाफ सख्त पुलिस कार्यवाही की जाएगी

दरअसल, जब गणेश चतुर्थी का जुलूस बदरीकोप्पालू नामक गाँव से गुजर रहा था, यह खबर फैल गई कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)